International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 24-02-2026, Accepted: 26-03-2026, Published: 10-04-2026
Volume 8, Issue 2, 2026, Page No. 16-17

समकालीन हिन्दी साहित्य में मजदूर वर्ग तथा कृषक जीवन

डॉ. स्मृति उरांव
शोधार्थी, डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
किसान को पूरे संसार का पालनहार कहा जाता है। किसान इस धरती को मां मानकर उसकी झोली धान से भरकर जी–जान से उसकी सेवा करता है। किसी भी मौसम में वह मेहनत करने से पीछे नहीं हटता चाहे बारिश होया धूप वह अपना कर्तव्य का निर्वहन करता हुआ परिश्रम करता है। तब जाके उसे धान्य की अर्थात् अनाज की प्राप्ति होती है।यहीं हाल मजदूरों का भी होता है। बहुत से लोग मजदूरी करके अपना जीवनयापन करते हैं। कई लोग तोऐसे भी होते हैं कि काम लेने के बाद भी मजदुर वर्ग को उसके उचित दाम नहीं देते हैं। मजदूर भीएक इंसान है। उससे इंसानियत से पेश आना चाहिए। किन्तु बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि किसानएवं मजदूरों की हालत पर किसी को कोई लेना–देना नहीं है। किसान न जाने कितने वर्षों से साहुकारों, बैंकों के कारण में दबे होते हैं। आज किसान को पालनहार कहा जाता है। किन्तु उनके अभाव को कोई नहीं देखता।

मूल शब्दः किसान, मजदूरों की स्थिति, संघर्ष, गरीबी, साहूकार

भारत कृषि प्रधान राष्ट्र है। देश की अर्थव्यवस्था आज भी कृषि पर आधारित है। वैसे देखा जाए तो हजारों सालों से देश के ज्यादातर लोग किसानी करते हैं। ग्रामीण परिवेश में तो नब्बे फिसदी लोग कृषिया कृषि पर आधारित व्यवसाय करते हैं। कृषि से ही किसान लोगों का भरण–पोषण होता है। हमारे देश की ज्यादातर जमीन उपजाउ है। इस वजह से खेती होती है। किसान पूरे विश्व का अन्नदाता है। किन्तु बहुत बारऐसा होता है कि वह स्वयं भूखा पेट सोता है। उसे उसके फसल की कीमत तक नहीं मिलती जिसके चलते वह आत्महत्या करने तक पहुंच जाता है। खुशहाली से किसान की अपना जीवन व्यापन भी नहीं कर पाता है।

इस शोध लेख मे हम इन दोनों वर्गों की कृषक तथा मजदूर वर्ग के बारे में अध्यापन करेंगे।यहीं दो घटक है जो ज्यादा पिसते हैं। इनका शोषण होता है। क्योंकि मजदूर समाज रचना में सबसे निम्न दर्ज का होता है। उसकी सामाजिक कीमत न के बराबर होती है। बड़े–बड़े आदमी अपना काम करने के लिए नौकरया मजदूर रखते हैं। उनसे बहुत ज्यादा पैमाने पर काम करा लेते हैं। किन्तु उचित मजदूरी नहीं देते हैं। वैसे ही किसान अपना संपूर्ण जीवन कृषि कार्य में बिता देता है। लेकिन हासिल क्या होता हैये सभी लोग भली–भांती परिचित हैं। मजदूर वर्ग मालिक का ही कहा करते हैं। जो मालिक देता है उसी में अपना जीवनयापन करता है। प्रेमचन्द्र द्वारा लिखित उपन्यास 'गोदान' में भी किसान जीवन तथा मजदूर जीवन की मार्मिक त्रासदी को लिखा गया है। इस उपन्यास में राय साहब केयहां काम करने वाले नौकर मजदूरी के साथएक समय का भोजन मांगने की बात करते हैं। और उस वजह से काम बंद करने का फैसला लेते हैं।यह बात राय साहब को उनका चपरासी कहता है– सरकार बेगारों ने काम करने से इनकार कर दिया है। तो राय साहब उन मजदूरों को धमकाने की बात करते हैं।यानि उन मजदूरों की कोई कीमत नहीं है, उनका कोई मोल नहीं है।ऐसा हमें प्रतीत होता है। गोदान उपन्यास में कृषक जीवन कीयानी किसानों की खस्त्रा हालत पर प्रकाश डाला है। गोदान उपन्यास काएक पात्र जिसका नाम होरी है। वह गरीब किसान है उसके पास बहुत थोड़ी जमीन होती है। जिसमें उसके परिवार का भरण–पोषण भी ठीक तरह से नहीं होता है। खेती से मिलने वाले अनाज पर बहुत ज्यादा कर होते थे। जिसके चलते उनको उनके मेहनत के जितना फायदा नहीं होता था। होरी के परिवार में उनकी पत्नी धनिया,एक बेटा गोबर और दो बेटीरूपा और सोनायानी कुल पांच सदस्यों का परिवार था। पर उतनी खेती पर घर खर्च नहीं निकलते थे। छोटे किसानों को कोई भी अधिकार न थे उनकी सामाजिक स्थिति ज्यादा ठीक नहीं थी। बड़े लोगों को काई रोक–टोक नहीं होती परन्तु गरीब किसान को सभी काम के लिए रोका टोका जाता है। होरी के पुत्र गोबर जब दूसरी जाति के लड़की से विवाह करता है तो उसके उपर सौरूपये और तीस मनका अनाज का डाण्ड लिया जाता है। गोबर जब भागकर शहर चला जाता है तब डाण्ड का सारा पैसा होरी को देना पड़ता है। इस डाण्ड के लिए होरी दातादीन से तीसरूपये का कर्ज लेता है। जो बढ़कर सौरूपये हो जाता है। जिसको भरने के लिए होरी के खेत में खड़ा अनाज भी पूरे कर्ज खुद भरने में ही चला जाता है। बाद में होरी को अपनी जमीन भी छोड़नी पड़ती है। अपनी दोनों बेटियों की शादियों के लिए उसको काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है।एक कृषक जीवन की स्थिति को साहित्यकार बहुत ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत कर बताया है किएक गरीब किसान अपने जीवनयापन करते हुए कितने कष्टों का सामना करते हुए अपने कर्तव्यों का निर्वाह करता है, करने की कोशीश में रहता है। होरी के बेटी सोना की शादी में लड़के लोग वाले दहेज के लिए अड़े बैठे थे। बड़ी मिन्नतें करने के बाद लड़के वाले शादी के लिए तैयार होते हैं। अपनी दूसरी बेटीरूपा कोएक तरह से होरी बेच ही देता है। क्योंकि अपनी गरीब परिस्थिति के कारण वहरूपा की शादी उससे कई ज्यादा बड़ेएक अधेड़ उम्र के इंसान से कर देता है। इसी आत्मग्लानी से होरी आगे मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

''पूस की रात'' कहानी में भी किसान जीवन की त्रासदी देखने को मिलता है। कहानी में हल्कू नाम काएक छोटा किसान होता है। अपनी खेत में खती करने के लिएक साहूकार से कुछरूपये कर्ज लेता है। ब्याज में। हल्कू को अपनी खेती से ज्यादा आमदनी नहीं होती है इसलिए वह कुछ अन्य काम भी करता था।एक समय जाड़े के महीने में साहूकार हल्कू से अपनी ब्याज के पैसे मांगने आता है। तब हल्कू अपनी पत्नी से तीनरूपये लाने को कहता है। पत्नी उसे कहती है तीनरूपये ही तो है। दे देंगे तो कम्बल कहां से आयेगा। तुमने बड़ी मेहनत करकेयेरूपये कमाये हैं। अभी पूस का महिना आ रहा है। ठंड बहुत गिरती है। तुम्हें खेती में जाना पड़ता है। तो तुम इसका कम्बल ले लेना हम फसल आने के बाद साहूकार को सूद के साथ पूरे पैसे दे देंगे।

पर उस समय हल्कू कहता है कम्बल का बाद में देखेंगे इस कर्ज के फंदे से मेरी गर्दन हटने दो। उस समय दोनों में बहस होती है। पत्नी कहती है कि कैसे जाने क्या मालूम इतना सारा सूद चुकाया है पर पैसे तो वैसे की वैसे ही रह जाते हैं। पत्नी के इतना समझाने के बाद भी हल्कू नहीं माना उसने वह तीनरूपये साहूकार को देकर अपने कर्ज में जमा करने को कहा। पूस का महीना शुरू होने के बाद फसल की निगरानी करने के लिए हल्कू खेत में जाता है तब उसका कुत्ता ''जबारा'' भी उसके साथ खेत में जाता है। पूस के महीने की खून जमाने वाली ठंड के कारण हल्कू आग जलाकर शेक रहा था। ठंड बहुत ज्यादा होने के कारण और वदन में कम्बल न होने के कारण उसको ज्यादा ठंड लग रही थी। वह आग जलाकर शेक रहा था। और उसका कुत्ता भी उसके साथ बैठकर शेक रहा था। थोड़ी देर बाद उसके कानों में कुछ आवाज सुनाई देती है। पर वह बहुत ठंड होने के कारण आग के पास से उठता नहीं है। उधर कुत्ता जोर–जोर से भौंक रहा था। हल्कू सोंचता है कि जबरा के कारण कोई भी नीलगायया जानवर खेत में आकर फसल नहीं खा सकता है।यह सोंचकर वह आग के पास ही बैठा रहता है। जिसके कारण गर्मी से उसे नींद आने लगती है। उधर कुत्ता भी भौंक–भौंककर थक गया था। हल्कू को भी कब नींद आ गयी पता ही नहीं चला। सारा फसल बरबाद हो गया। जिस फसल के चलते साहूकार को ऋण चुकाना था। नहीं चुका पाये।

निष्कर्ष

समकालीन हिन्दी साहित्य में हमें विविध लेखक, कवियों के साहित्य में मजदूर तथा कृषक जीवन पर लिखा हुआ बहुत सारा मिलेगा। प्रेमचन्द्र, पुणीश्वरनाथ रेणु, नागार्जुन आदि साहित्य तथा कविताओं में मजदूर और कृषक जीवन पर लेखनी चली है। उस समय की व्यवस्था, मजदूर, गरीब, तथा छोटे किसानों को सताकर जुरमाना द्वारा लूटने के लिए ही बनाई गयी थी। मजदूर तथा किसान वर्ग को सम्मान नहीं मिलता था। वह सिर्फ और सिर्फ काम करने के लिए बने थे। बड़े–बड़े लोग इन्हीं छोटे लोगों को अपना गुलाम ही समझते थें उनके साथ मनचाहा बर्ताव करते थें।

संदर्भ सूचि

1. गेदान– प्रेमचन्द्र, सरस्वती प्रेस इलाहाबाद
2. मानसरोवर खण्ड1–प्रेमचन्द्र प्रकाशक–सरस्वती प्रेस बनारस
3. सुदीप भोला– सुदीप भोला कविता
4. पूस की रात– प्रेमचन्द्र, मासिक पत्रिका 'माधुरी'